RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

# पिघलता हिमालय

वर्ष 42 अंक 3 हल्द्वानी सम्वत् 2083 सोमवार 22 जून 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

## डॉ.कुन्दन सिंह पांगती से बातचीज

# जसमलसिंह-मंगलसिंह दरकोट में थी सबसे बड़ी फर्म

**व्यापार में समान ढोने को 80-90 लक्खा और बड़े सामान लाने के लिये खच्चरों का झुण्ड हुआ करता था**

**काशीपुर की 'सुदामा लाल राम आश्रय', 'हृदयनारायण' फर्म से कपड़े का सामन आता था**

**हल्द्वानी की 'लालमणि खीमदेव' फर्म से तम्बाकू सामग्री आती थी**

**करीब 500 बकर ( भेड़-बकरी ) घर में थे जिन्हें अद्योली में देते थे**

**बालासिंह की पधानचारी सब याद करते हैं**

**कार्यालय प्रतिनिधि**

आज बाजार का स्वरूप बदल चुका है, ऑनलाइन कामकाज भी होने लगे हैं। कल्पना कीजिए उस दौर की जब आने-जाने के रास्ते बीहड़ थे और सामान ढुलान के लिये पशुओं का ही सहारा था। उन स्थितियों में दुर्गम क्षेत्र में कोई फर्म चलाना और लाखों की उधारी फंसी होने के बावजूद हंसते हुए झेलना। साथ ही प्रकृति से तालमेल बनाये रखते हुए व्यापार का तिब्बत से लेकर तराई तक सामंजस्य साधारण बात नहीं है। इस तरह के हालातों में जन्म लेने वाले डॉ. कुन्दन सिंह पांगती जी से आज की विशेष बातचीज है। डॉ. पांगती उस पीढ़ी में से हैं जिन्होंने अपनी आँखों से यह व्यापार और व्यवहार देखा है। यह प्रसंग आगे बढ़े इससे पहले पहले इनके बारे में बताते हैं- डॉ.पांगती के दादा हुए चन्द्र सिंह पांगती। चन्द्रसिंह जी रायबहादुर किशन सिंह के साथी थे। चन्द्र सिंह जी तीन भाई थे, जसमल सिंह, चन्द्र सिंह और मंगल सिंह। चन्द्रसिंह पांगती के सुपुत्र हुए बाला सिंह। पिता के निधन के बाद माता श्रीमती हेमा देवी पर बालासिंह की बड़ी जिम्मेदारी थी। उस दौर में घर के इकलौते बालक को देखते हुए जल्द ही इनका विवाह डोटिला की हरकी देवी से हुआ। (स्व.हरकी देवी पांगती निधन 101 वर्ष की में इसी साल रविवार 26 अप्रैल 2026 को हुआ। पिघलता हिमालय ने उनकी जीवनी पर काफी जानकारी दी है।) इनका संयुक्त परिवार मिलम दरकोट और भैंसखाल तक माइग्रेशन व्यवस्था में आवत-जावत करता रहा है। मुनस्यारी के दरकोट में जसमलसिंह-मंगल सिंह सबसे बड़ी फर्म हुआ करती थी। बालासिंह-हरकी देवी के पुत्र हुए कुन्दन सिंह, जिनका जन्म जनवरी 1947 में भैंसखाल में हुआ।

शेष पृष्ठ 2 पर

**लोक कथाएं मूल रूप में मौखिक तरीके से सुनने-सुनाने की चीज है। कहने वाले के कहने का ढंग, ध्वनि, हावभाव से जो रस उत्पन्न होता है, वह अनूठ होता है। हर कहने वाला सुविधानुसार मूल घटना में कुछ जोड़ता घटाता रहता है, जो कि लिखित में सम्भव नहीं है। इस कॉलम में छठी लोककथा प्रस्तुत है। -सम्पादक**

पहाड़ों की गरीबी पहाड़ों के बराबर ही रही है। यदि सबसे ऊँचा पर्वत उन्तीस हजार फीट के लगभग है, तो गरीबी तीस हजार फीट। बात उस जमाने की है, जब पर्यावरण या वनसंरक्षण जैसे शब्दों का आविष्कार, आज के सन्दर्भ में नहीं हुआ था। गरीबी का कारण राजनैतिक या प्रशासनिक ही रहा हो, ऐसी बात नहीं थी। आज जहाँ वनहीनता मनुष्य के अस्तित्व के लिये खतरा बन चुकी है, शताब्दियों पूर्व घने वन व इसमें निवास करने वाले हिंसक वन्य जीव ही, अज्ञानतावश या उस समय की पारिस्थितियों के कारण ही सही, बहुत अधिक नहीं तो कुछ हद तक, बाधक माने जाते थे। पर उस जमाने में भी, भले ही लोग निपट निरक्षर रहे हों, कुछ कुशाग्र बुद्धि वाले परिश्रमशील लोगों का अस्तित्व था।

रामगंगा के किनारे एक गाँव था चौनाली। इस गाँव में धनी या साधन सम्पन्न किसान तो कोई नहीं था, इनमें भी हरमल नाम का व्यक्ति अत्यधिक गरीब व साधन विहीन था। माँ बाप उसके बचपन में ही मखमारी (महामारी) के शिकार हो गये थे। वह लोगों की गाय, बकरियाँ चुगाकर व खेतों में मजदूरी करके पेट पालन करते हुए जवान हुआ था। गरीबी, अभाव चाकरी व तिरस्कार से उसका सामना बहुत करीब से हुआ था। पर जो दो चीजें उसे प्रकृति की ओर से मिली थीं- वह थीं तीक्ष्ण बुद्धि व मजबूत कद काठी। उसने अपनी बुद्धि को माँ तथा मजबूत कद को ही बाप समझा। जब माँ बाप मिल गये तो उनसे उत्पन्न हुआ श्रमशील, दूरदृष्टि वाला एक युवक, हरमल। दिवस पर्यन्त हाड़तोड़ मेहनत करने पर भी उसे भरपेट भोजन नहीं मिल पाता था। अत: उसने स्वयं खेती करने का निश्चय किया। पर उसके पास जमीन कहाँ थी? रामगंगा के किनारे नदी का छोड़ा हुआ मैदान था, जिसमें भयंकर जंगल व झाड़ियाँ थीं। इसमें साँप, चीता, बाघ तथा अन्य हिंसक जन्तु इतने अधिक रहते थे कि कभी किसी के मन में उसे आबाद करने का विचार ही नहीं आया। हरमल की नजर उस मैदान पर पड़ी। उसने उस मैदान को साफ करके खेती करने का विचार किया। तब वनों पर कोई सरकारी नियन्त्रण नहीं होता था। अत: सरकार की ओर से कोई रुकावट नहीं थी। गाँव के लोगों ने उसकी इस सोच का हँसी उड़ाई। उसने पहले साल दिन-दिन भर मेहनत करके आठ दस नाली जमीन साफ की। जमीन रेतीली थी, पर इस पर हजारों वर्षों से पेड़ों की पत्तियाँ गिरकर सड़ी थी, अत: यह जमीन बहुत अधिक उपजाऊ थी। उस साल बारिश भी अच्छी हुई थी। उसने मक्का बोया ताकि फसल जल्दी तैयार हो जाय और सालभर के लिये भोजन मिल सके। फसल जल्दी तैयार हो गयी। जंगली जानवरों से जो फसल बच गई, उतनी ही उसके साल भर के खाने के लिये पर्याप्त थी। अब उसे भोजन के लिये किसी का मुँह देखने की आवश्यकता न थी। इस प्रकार दो तीन साल के अन्दर ही उसने पूरा

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

# स्थानान्तरण को लेकर उच्चशिक्षा विभाग में ऐतिहासिक पहल

**उत्तराखण्ड के उच्चशिक्षा विभाग में स्थानान्तरण को लेकर हमेशा कुछ न कुछ धब्बे लगते रहे हैं लेकिन इस बार जून माह में जिस प्रकार से बड़ी संख्या में स्थानान्तरण हुए वह ऐतिहासिक पहल है। आंखिर अन्य विभागों की तरह इसमें भी तो इधर-उधर होने ही चाहिये। 500 से ज्यादा शिक्षकों के तबादले को लेकर मचे हड़कम्प में कहा जा रहा है कि जिन जगह की चाह नहीं थी शिक्षकों को उन जगहों पर भी भेजा गया है। लेकिन ईमानदारी से देखा जाए तो इस पूरी व्यवस्था में पहली बार बहुत विचार करने के बाद इस प्रकार की उथल-पुथल की गई। तबादला एक्ट के अनुसार दुर्गम की सेवा अवधि पूरी करने वाले कई शिक्षकों का तबादला मैदानी जिलों से मैदानी जिलों में किया गया है। एक ही स्थान पर लम्बे समय से रुके कर्मियों को हिलाया गया है। हल्द्वानी के एमबीपीजी कालेज से 60 से अधिक प्राध्यापकों के स्थानान्तरण से जबर्दस्त हलचल मची।**

**जून माह में हुए इस स्थानान्तण की हलचल के पीछे अन्य कारण भी हैं, चूंकि विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में कालेज प्रशासन उलझा है। साथ ही ऑनलाइन प्रवेश के बाद नये सत्र के प्रवेश की तैयारी भी करनी है जबकि एक ही स्थान से एकसाथ कई लोगों के जाने से दिक्कत होनी ही है और जो नये आयेंगे भी तो उन्हें समझने में समय लगना ही है। इन सबके बावजूद स्थानान्तरण की पहल को ऐतिहासिक कहा जायेगा। नये सत्र में परीक्षाफल, प्रवेश के अलावा छात्रसंघ चुनाव की जो आहट है वह बहुत तीखी होनी है। कालेजों में बाहर से होने वाला दखल भी चुनौती के रूप में है। विधानसभा चुनाव 2027 को देखते हुए भी कुछ अनुमान लगाए जाने लगे हैं।**

**इन स्थानान्तरणों में शिक्षकों के साथ कर्मचारियों को इधर-उधर किया गया है। पदोन्नति के रूप में भी लाभ दिया गया है। इन सबको देखते हुए विचार होना चाहिये। सबको मनचाही जगह नहीं मिल सकती हैं लेकिन नियमों के अनुसार निर्धारित समय पर स्थानान्तरण प्रक्रिया होती है तो किसी को कुछ कहने का अवसर नहीं मिलेगा। इसके अलावा उनपर भी लगाम जरूरी है जो अपने को मनचाही जगह सम्बद्ध कर सबको मुंह चिढ़ाते हैं।**

## देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

### समुद्र से अब हवा में चलेगा डाटा सेंटर

शंघाई। चीन ने पानी और बिजली भी भारी खपत से निपटने के लिए दुनिया का पहला विंड-पावर्ड (हवा से चलने वाला) अण्डरवाटर डाटा सेन्टर लॉन्च किया है। शंघाई के तट पर समुद्र की सतह से 32 फीट नीचे स्थित यह सेन्टर पूरी तरह विंड फार्म की बिजली से चलता है।

### कार खुद अपनी गलतियां बताएगी

लन्दन। जब सेल्फ-ड्राइविंग (बिना ड्राइवर वाली) कारें दुर्घटना करती हैं तो इंजीनियरों के लिए यह समझना पहेली बन जाता है कि एआई के दिमाग में आखिर चल क्या रहा था। किंग्स कॉलेज लन्दन के वैज्ञानिकों ने इसे सुलझाने के लिए एक नया एल्गोरिदम बनाया है। यह हादसे के समय की परिस्थितियों में छोटे-छोटे बदलाव करके देखता है।

### आर्मेनिया में चुनाव, पाशिन्यास की जीत

येरेवान। आर्मेनिया में हुए संसदीय चुनावों में प्रधानमंत्री निकोल पाशिन्यान की सिविल कॉन्ट्रैक्ट पार्टी ने करीब आधे मत हासिल करते हुए संसदीय चुनाव जीत लिया। इस चुनाव को अजरबैजान के साथ शान्ति समझौते से निपटने और पारम्परिक सहयोगी रूस को छोड़कर पश्चिमी देशों की तरफ झुकाव बक्षने की पाशिन्यान सरकार की नीति की परीक्षा के रूप में देखा जा रहा है।

### तनाव घटने से शेयर बाजार में तेजी

मुम्बई। घरेलू शेयर बाजार में पिछले दो कारोबारी सत्रों से जारी गिरावट थम गई है और दोनों मानक सूचकांक चढ़कर बन्द हुए। इजराइल एवं ईरान के बीच तनाव कम होने और दुनिया के अन्य शेयर बजारों में तेजी से सेंसक्स 394 अंक चढ़ा जबकि नफ्टी 119 अंक की बढ़त में रहा। विश्लेषकों ने कहा बैंक शेयरों में तेजी और कच्चे तेल के दाम में नरमी से भी बाजार मजबूत हुई है।

### दस करोड़ डालॅर की ठगी में गिरफ्तार

वाशिंगटन। कैलिफोर्निया में भारतीय मूल के 44 वर्षीय अमेरिकी नागरिक महेन्द्र मखीजानी को लगभग दस करोड़ अमेरिकी डॉलर की बैंक धोखाधड़ी के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। आरोप है कि उसने बीमा पॉलिसी से जुड़े स्वामित्व रिकॉर्ड में हेरफेर कर बैंक को भारी वित्तीय नुकसान पहुंचाया।

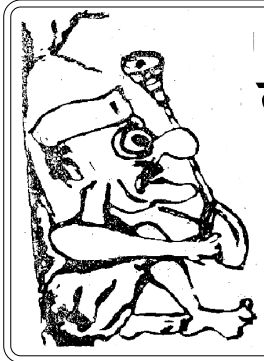

## फसक

# दाज्यू, खुरापाती चरस-गांजे जैसे हो गये ठैरे

## लाइन मिलाने और लाइन लगाने वाले हमेशा रहते हैं बल

दाज्यू, गर्मी ने बुरी तरह च्वेड़ दिया था अब बरसात में गले-गले तक आने वाली है। अपना मगनुवा खुश है कि उसे पार्टी वालों ने पद दे दिया है। दाज्यू, मोर्चा के बेसुमार पद होने वाले हुए। जुवाओं का मन लगा रहता है। दाज्यू, मगनुवा तो ठीक ही समझो, अब भैरु दा चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। उनके साथ खुरापाती सुबह-शाम राउण्ड में राउण्ड लगा रहे हैं।

दाज्यू, कलजुग में खुरापाती चरस-गांजे जैसे हो गये ठैरे। मन बहलाने के लिये फेसबुक और रील हुई ही। वैसे भी लाइन मिलाने और लाइन लगाने वाले हमेशा रहते हैं बल। जब तक जिबड़ी में स्वाद है और पैर में चाल, तब तक दौड़ भी होती रहती है। उसके बाद अस्पताल और पाताल.....पता नहीं.....। फिर भी भकोराभकोर मची है। भजरैंजखान पुलिस ने पर्यटक बनकर आए चार लोगों को गांजा तस्करी के आरो में पकड़ा। इनके कब्जे से 28 किलो गांजा बरामद हुआ। दाज्यू, अपनी फिटनेस के लिये आदमी क्या जो नहीं कर रहा है। कोई काहे में मगन कोई काहे में। विचाई विभाग वाला साहब नहर-गूल का डिजायन भूल चुका है बल क्योंकि वह चकमक वाले गीतों में उलझ गया है। हम सोच रहे थे साहब मन लगाने के लिये गाते होंगे, पर उनरुवा बता रहा है- 'रील बनाने के लिये सब जोड़-जन्तर होता है और साहब के सामने आह, वाह करने वाले तैनात रहते हैं।'

दाज्यू, खानपुर विधायक उमेश कुमार को पुरानी विंजेट(मोरिस)कार बेचने का झांसा देकर साढ़े चार लाख रुपये की ठगी कर ली गई। पुलिस ने धोखाधड़ी का मामला दर्ज किया। दाज्यू, और ही और हो रही है चारों ओर। क्या जो कहें? बाजपुर के मझरा प्रभु वार्ड में सभासद प्रतिनिधि ने अवैध शराब पकड़कर नष्ट की बल। काशीपुर की अलीगंज रोड पर बेकाबू डम्पर बैंक परिसर में घुस गया। इसी शहर के आईटीआई कोतवाली पुलिस ने शंकरपुरी कॉलोनी में घर के बाहर चरस बेच रही महिला को पकड़ा। चरस खरीद रहे युवक भग गये थे। दाज्यू, लाइन मिलाने और लगाने का काम इसी को कहने वाले ठैरे। डिग्री कालेजों में दबादब स्थानान्तरण से गजब ही हो रहा है। दाज्यू, हरिद्वार के कनखल से चोरी की गई तीन साल बच्ची को पुलिस ने बरामद किया और गिरोह के 6 सदस्य पकड़े हैं बल। हर तरह की खुरापात चलती रहती है इस दुनिया में। दाज्यू, पाटी के पहले नगर पंचायत चुनाव में निर्दलीय नारायण लाल अध्यक्ष पद पर जीत गये, उन्होंने भाजपा के नवीन राम को 164 वोट से हराया। उसके बाद नारायण ने कहा- 'मैं पहले भी पुष्कर सिंह धामी का सेवक था और भविष्य में भी रहेंगे।' -तुम्हारा भुली झकरुवा

## जसमलसिंह-मंगल....

प्रथम पृष्ठ का शेष

कुन्दन सिंह जी अपने बचपन के दिनों और बुजुर्गों को याद करते हुए बताते हैं- 'भैंसखाल में जन्म के समय उन्हें मन्दिर में दिया गया और फिर उन्हें माता-पिता को सौंपा, क्योंकि इनके जन्म से पहले दो बच्चों के न बचने पर सहमे परिवार ने मन्दिर में सुपुर्द कर भगवान का आशीर्वाद चाहा। बचपन में इनका नाम गिरधर रखा गया। बाद में कुन्दन कहने लगे। इस प्रकार कोई गिरधर तो कोई कुन्दन कहता।' इनके बाद भाई-बहनों में दमयन्ती (वृजवाल), चन्द्रा (मर्तोलिया), नवराज पांगती, कवीन्द्र पांगती हुए। इस प्रकार संयुक्त परिवार में यह सारे सदस्य भी थे।

बचपन की यादों को आगे बढ़ाते हुए डॉ. कुन्दन बताते हैं कि तिब्बत व्यापार बन्द होने से इसमें लगे लोगों की आर्थिकी खराब होने लगी थी। व्यापारियों की काफी पूंजी तिब्बत में फंसी रह गई। तब दरकोट में परिवार की फर्म 'जसमलसिंह-मंगलसिंह' मुख्य केन्द्र होता था। दूर-दराज से सभी लोगों को इसका आसरा था। फर्म के लिये काशीपुर से सुदामा लाल रामआश्रय, हृदयनाराण फर्म से कपड़ा आता था। इसी प्रकार हल्द्वानी की फर्म लालमणि खीमदेव से तम्बाबू सामग्री आती थी। सामान लाने के लिये पशुओं का समूह था। भेड़-बकरी भी दो प्रकार के होते हैं। 80-90 लक्खा थे और 500 से अधिक बकर। लक्खा तो सामान ढोने के लिये लगाए जाते थे और बकर अद्योली में देते थे। बकर ले जाने के लिये रिलकोटी जी, धपवाल जी और एक बसन्तकोट के थे। इसी तरह खच्चरों की देखरेख में धारचूला के श्रीराम कुटियाल और तिंकर के दिलीप सिंह भी थे। कपड़ा इत्यादि बड़ा सामान ढोने के लिये खच्चरों का उपयोग होता था। तिकसैन में पुराना 'हयात सिंह होटल' मशहूर हुआ करता था। डॉ.कुन्दन सिंह के पिता बाला सिंह की पधानचारी को आज भी लोग याद करते हैं। दरकोट ग्राम के लम्बे समय तक प्रधान रहे। इसके नाते भी दरकोट में दूर दराज से लोगों का जमावड़ा रहता था।

कुन्दन सिंह कक्षा 5 तक मिलम-दरकोट में पढ़ाई करने वाले बच्चों के दल में रहे हैं। तब इनके शिक्षक बासुदेव जी और बहादुर सिंह लस्पाल थे। कक्षा 5 बोर्ड परीक्षा का सेन्टर कव्वाधार में पड़ा था। मिलम जैसे सीमान्त क्षेत्र का प्राइमरी स्कूल भवन आज भी लोगों की कल्पना से परे हो सकता है। सुन्दर भवन, मुख्य द्वार, चाहरदीवारी, सुन्दर फुलवारी, फुटबाल के तीन मैदान इसमें थे। बैठने के लिये कुर्सियां। गुरुजनों के लिये बड़ी मेज। एकदम दूरस्थ में इतनी साज-सज्जा किस तरह हुई होगी। पांगती जी बताते हैं- तिकसैन का स्कूल तक नमजला में हुआ करता था। नमजला से तिकसैन बच्चों की टोली पेड़ लगाने जाती थी और घिंघारू की झाड़ से बाउण्ड्री लगाते थे। गुरुजनों की देखरेख में कालेज का सारा सामान बच्चों ने ही तिकसैन में ढोया था। छात्रवास में रहकर पढ़ाई करते थे। भोजन व्यवस्था के लिये धन सिंह कुक था। बारी-बारी से लड़के अपने घर से राशन लाते और सभी के लिये भोजन बनता था। इस प्रकार इण्टर विज्ञान का प्रथम वैच कुन्दन सिंह व साथियों का रहा। उस दौर के गुरुजनों में श्री पी.सी. पन्त एवं श्री पूरन चन्द्र पन्त जैसे विद्वान थे जिन्होंने छुट्टियों के दिनों में छात्रों को अपने घर बुलाकर तक पढ़ाया।

बचपन की इन तमाम यादों के साथ कुन्दन सिंह जी ने मेरठ मेडिकल कालेज और इलाहाबाद से पीजी किया। संयोग से ट्रेनिंग के लिये अल्मोड़ा आना हुआ लेकिन भाग्य में रेलवे की नौकरी थी। भारतीय रेलवे के मेडिकल में इनकी पोस्टिंग हुई। बनारस में सर्वाधिक समय 30 साल ईएनटी विशेषज्ञ के रूप में सेवा करने वाले डॉ. कुन्दन सिंह पांगती चार साल इंचार्ज रहे और अवार्ड भी मिला। दीवान सिंह टोलिया जी की सुपुत्री कुसुम जी के साथ इनका विवाह हुआ (आर.एस. टोलिया जी की बहिन हैं)। डॉ.पांगती की सफलता में श्रीमती कुसुम जी का योगदान बराबर रहा है। इनकी सुपुत्रियां रिचा, रौनी, रुचिरा भी मेडिकल क्षेत्र में योग्य हैं।

डॉ. पांगती बताते हैं- नौकरी के शुरुआती दौर में तब लखनऊ से दो कोच चलती थी। टनकपुर तो रेलवे का मुख्य स्टेशन हुआ ही, चकरपुर ससुराल भी। ऐसे में बनारस से रेल का सफर पहाड़ से जोड़े रखने वाला ही था। रेलवे की ओर से मिलिट्री कैम्प का अवसर भी लगातार रहा और इन्हें मेजर पदनाम दिया गया लेकिन चिकित्सक के रूप में इन्होंने हमेशा डाक्टर पदनाम को ही सर्वोपरि रखा और सेवानिवृत्त होने के बाद भी चिकित्सा परामर्श के लिये तत्पर हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## जोहारि बोलि भाषा

# खापक म्यूठ, मऽनक त्यूत
# (वाणी की मधुरता, मन में खोट)

**जगदीश सिंह बृजवाल**

ओ दा ऽऽ ...ने,! मैस ले, किसम-किसमक सोच समज राखनि वाल हन- ''क्वे बोलैदार, खापकाट्, सीद-सौद, अच्यौत, सनका, पै जू मैस, स्यैनिन' 'खापक म्यूठ, मऽनक त्यूत' हन बचि बे रन भे उनिबी।''

गों घऽर, बजार, या सहरबन-सबे जाग वस मैसनक कमी न हन, अहा! 'चौसिया उनर बोलौन- चलौन, म्यूठ थौल केबर' कौच्चे कुकूरक गू औंग लगै दिनन' मैस दे ठारूलत इनि भे भल दुन्नी मा क्वे छे नै। जूले इनर पल्ल परि, 'चौपट हे-गया सोचिया.. भायो!'

ठूल खौलक चबूतर मा ज्यून् सयान, सबे साठ बे मलिके वाल मैसान रोज ब्याल के खुब गपसप कनन। मौद दा, चूनरू का, दौलुपू बू, दुर्गू टापलि...आज मौद दाऽल कुछ बोलै...भायो सुना...!

मौद दा- अरे दिखिया, 'तीमिल कदी ढबक मैस जूनर आबन सोच-बिचार हन पर भगवाने बचौ! 'खापक म्यूठ, मऽनक त्यूत' मैस थे बी।

चूनरू- होय! मौद दा, 'ठीक्क फसक कने। हैमि सोचने रोंल जबत गट-भल मैसानथे 'बकराक' दे छानी चूंल। अबगुनत हैमि मां ले होल, फसक सपनक लिहैलि भे।'

दौलपू- 'आखिर काकज्यू, म्यर समझमा के ने ओने, तिमि की कन चौना? कांबटि आज यस फसक तमर मऽनमा ऐग।'

दुर्गू- अरे भूला! दौलपू, 'जू फसक मौद दा कने, सही छ, आज चौलात च्यूठ खाप, मऽनक कौल' मैसन कमी नैछ। बचीबे रनाक काम ले छ।

मौद दा- होय दुर्गा, 'म्यरे सामनि ऐक दिन गजे सिपे थे दिखि, वल, येक बिचौरथे भल्लि के घापट घैलि दी, पहा मैल सुनिले की उ दकार भोत गलत में बल।'

बतौ येक दिनक छी- अपछियान 'लौंड' ज्वान -जमान गजे सिपे घऽरक बौट पुजि, वल गजे सिपै थे पुछि- दाज्यू 'जमन ठेकेदारक' घऽर बते दिला तिमि। गजे सिपै- होय भूला! ते थ्वार अपछियान दे लागने, का बसछे हो? बस, पानि पी, मनी सास्ती पे बतै ले ह्यूल हा। 'मैस्मौद्' ले ब्याल बगत उदीन गजे काऽ वा पुजियूं भे कंछा।'

अपछ्यान लौंड बसिगे, पानि पी, फिरि थ्वार सास्ती, पै बोले- 'दाज्यू म्यर नाम 'मुहनि' मैं तलिज्वार रनि वाल छूं, मी 'जमन ठेकेदार' दकार काम कनाक लिजे मुनस्येरि ऐरू.. उनर घऽर कां छ, बतै दिस्या, मैं न्है जौंल आब।'

गजे सिपै- भुला मुहनिया! 'येक बतौ यस छ भूला, ते थ्वार दिन म्यर वां काम के दिने भले हन। भूलाऽ..? कस।

मुहनि- दाज्यू, वीक लिजे ठेकेदार सैफ थे तुमील बात कन परुल, हैमित लेबर मैस भंय जा काम मिलि, वती काम कै जानी भे दाऽ..

गजे सिपै- मुहनि भूला, 'ते आज म्यर घरे बस, अरामल रो, भोल में ठेकेदार सैप थे बात कोंल, ठीक छे।'

मुहनि -होय दा, जस कंछा। भले भे।

मुहनि मने-मन मौत खुस्सी हेग, भल आदिमिक पास पुजिग्यूं। जरूर म्यर भले होल।

दोहर दिन, 'गजे सिपै' रात्ते-रात्ते जमन ठेकेदार घऽर पुजिगे, ठेकेदार सैप ठिक्क घऽर मा मिलगे।

गजे सिपै- अहो! ठेकेदार सैप नमस्कार, भल छा! कां चलिए रे काम-काज। तिमि ठेकेदार भया। 'रजाक घऽर, मोत्यूक की अकाल'। हो ठेकेदार ज्यू।'

जमन ठेकेदार - 'थ्वार मुसकरैबर, ना हो दा, उदी टूक मां के चरौछा। तिमि।

गजे सिपै- 'योत दिखलोटी छ, ठेकेदार सैप, आज जरूरी काम तिमि दकार यस छ, जू जरूर तिमि के दिला हो।'

जमन ठेकेदार- 'मऽनन च्यांव ढबक, गजे सिपै थे पल्ली बी पैहनेर भे। 'की छ, बतोस्या, हे सकुल तो भले भे।'

गजे सिपै- ठेकेदार सैप, 'म्यर कुराक काम कदी मैंन बी लम-लमी गे, एक मिसतरि, एक लेबर छ, कामे न हे पौने, फसक यस छ, कि बेलि छाक ब्याल बगत म्यर वां तलि ज्वार बी एक लौंड ऐरेछी, तमर घऽर पुछनी, अबेर हे गेछी, मेल आबने वा बस के, थ्वार काम के दिले केत, वल के-तिमिथे पुछा कन्ही, ज्ये कछा, ठेकेदार सैप, म्यर वां एक मैन काम के दिनत भले हन। फिरि भेज दिछी.

जमन ठेकेदार- मरयूं मनल, 'ठीक छ् दा, म्यर ले मलि ज्वार पुलक काम चलिरे, येक मैंन तमर वां काम कबेर भेजि दिया।

गजे सिपै- होय! 'ठेकेदार सैप, जरूर वोक बाद लगै घूंल, आब जोंछ, पै काम वाल ऐ गया होल।'

जमन ठेकेदार- 'चहा पीबेर जहाऽ हो गजे दा, सिपैल चहा पीबर आबन घऽर तारिग्यूक कै।'

मुहनि- दाऽ, 'फसक हेग्यूं होल।'

गजे सिपै- 'होय, मुहनियां भोल बी काम कर ते भलूके।'

होय, दा! 'एक मिसतरि एक लेबर दकार 'मुहनि' उचटे बी काम कन बसि, पेलि बी लगियां लेबर हलकौ-हलकौ मुहनि दिखि हंसन बसि, मुहनि थे उनिथे दिखिबेर के कौन नी औनी। बस, आबन काम कन रे।'

येक-द्वी, दिन मुहनियांक खुब खातिरदारी बरिया चहा-नास्त् खान- पिन, ब्याल बगत मनी तुङ-ताङ ले छी, पर वोक बाद मुहनि थे रात्ते द्वी सुक स्वाट, दौङचू दकार, एक गिलास चहा, दिनमा ले भलके पेट भरि खानि नि मिलन बसि, मुहनियांल सोचि, 'चलो एक-द्वी दिनक बाद मिल जौल पर फिरिले, वसे...जस, 'आब गजे सिपै मुहनि दकार भलके मुखल ले नी बलौन बसि।'

अहो! मै 'रनकराल' समजि नि सकि, -''मुखक म्यूठ, मऽनक त्यूत'' मैस थे आब अथैन हेग तब मुहनियांल बोले...!

गजे दा- 'आब मैंन दिन हन बसिगे, मील आब घर जानछ्, नाननिन चौ रया हौल, दा, म्यर हिसाब चैदियो आज ब्याल बगत।'

गजेसिपै- -ट्येरिबेर जे, एक मैन एजि करत पै जाले आजे कां जान्हे।'

मुहिनि- ना, दा! 'आब मी जौंछू। चौर जान ले जरूरी छू। नाननिन चै रयां ह्वल।'

गजे सिपै- मनी गुस्सैल केबर दे, 'चाय, नास्ता, खानि कैटि कुटि ब्येर द्वी-चार हजार बचूल ल्हेज जानी छे जा।' आब मैं की कों सकून।'

मुहनि- 'हिसाब कदियां दाऽ, भोल रात्ते मी घऽर नै जौछू।

गजेसिपै- 'त्यर भाई एक मैनाक, चहा, नास्ता खानी बिडि-सिगरटक लगे- लुगीबेर आब द्वी-चार हजार जदी, ले छ। रात्ते तहै मिलि जौल। ठीक।

मुहनि- दाऽऽ! 'तस अंधेर न करा, म्यर हिसाबल खान, चहा, कलियो रूपै ले काटलात, तो ले म्यर दस-ग्यार हजार रूपै बचने चाये, दाऽऽ, 'गरीब दकार यस झन करो।'

गजे सिपै- गुस्सल, 'अच्छा खानि पिनी फिरी जै की औछ, जू त्यर छ, ली जा बैकि झन बोलो।'

पांच हजार मुख दे रैखि दी ब्यर यूं लिज जा... आबन घऽर जा।

मुहनि- दाऽऽ...यूं तिमि भल न कना, 'चहा-पानि, खानि-कलियोक इदि रूपै काटि दी हला, मलि वाल थे ले चाओ,?

गजेसिपै- गुसल लाल-प्यूल हेगे। 'अब ज्यादा धन बोलो, आबन देलि ढगिबेर भीतर न्हैगे।'

हे ईश्वरअ! मुहनि सोच मा परिगे, 'मैं-रूमुहनि रनगार कि धान करूं, कौक देलिक पल्ल परि, जू थे भगवान समजनि, वत- 'रागस' हनभेछ, समजि नै? कसकै समजि पौंछी इदी जल्दी, वी द्वी 'लेबर' मुलमुल के हंसनिछी, फिर ले मैं कूकरियाल नी समझ सकी, आंखिर हसनक कारण पुछि लिछी, जानि लिन्ह तो यस नी हन,कां फसि केबर, उनर ले के मजबूरी ह्वाल, रनगरा कि पत यस ह्वल केबर 'मुखक म्यूठ, मऽनक त्यूत' 'मैस बी बचि रया, यस मैसान तमर अगल-बगल बन ले भोते घुमन्याल.....'

## भारत के कॉकरोच

सफेद पोश जब
दीमकों की भांति
खत्म कर देता है
प्रजातन्त्र की दीवारों को
राष्ट्र मीडिया जब
चौथे स्तम्भ के
पीलरों की जड़ों को
कुरेद कुरेद कर
तानाशाही को जन्म देता है
शिक्षा जब
विद्यालयों से निकल कर
व्यवसाय बन जाती है
और राजनीति
स्वार्थ, पाखण्ड, भ्रष्टाचार
में लिप्त होकर
निरंकुशता पर उतर जाती है
सत्ता की भूख जब
निगलने लगती है
युवाओं के सपनों को
तब कहीं उन दीवारों
और पीलरों की दरारों से
निकलते हैं युवा कॉकरोच
जिनके नीचे दफन हो जाते हैं
तमाम उम्मीदें, सपने और
एक पूरा युवा जीवन।

**-राजपूत गोकुल सिंह मौरा**, गंगोलीहाट

## ज्योतिष की बातें

22 जून 2026 को बुध स्वराशि मिथुन से निकलकर शत्रुराशि कर्क में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शुभग्रह गुरु और शुक्र से युति भी होगी। कुल मिलाकर बुध निर्बल ही रहेगा। बुध बुद्धि, वाणिज्य, व्यापार, मामा, लेखन कला, गणित, लेखा, त्वचा, त्रिदोष प्रकृति आदि का कारक होता है। फलदीपिका के अनुसार बुध के लिए दूसरा, चौथा, छठवाँ, आठवाँ, दसवाँ और ग्यारहवाँ स्थान शुभ होता है। अतः अगले 15 दिन बुध अपने कारक विषयों में मिथुन, मेष, कुम्भ, धनु, तुला व कन्या राशि के जातकों को अल्पमात्रा में ही शुभफल प्रदान करेगा। निर्जला एकादशी व्रत- ज्येष्ठ शुक्लपक्ष एकादशी उदयव्यापिनी तिथि में निर्जला एकादशी का व्रत किया जाता है। अतः बृहस्पतिवार 25 जून 2026 को निर्जला एकादशी का व्रत रखा जाएगा। वर्ष की चौबीस एकादशियों में इस निर्जला एकादशी का विशेष महत्व है। केवल इस एक मात्र एकादशी का निर्जला व्रत करने से वर्ष की सम्पूर्ण 24 एकादशियों के व्रत का फल प्राप्त हो जाता है। शुभं भवतु !!

**-ओंकार नाथ कोष्टा**
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

## सम्यक् विचार

# शुगर लेवल आदि का खेल

बहुत पहले शुगर यदि 200 इकाई तक हो तो सामान्य कहा जाता था 200 के ऊपर होने पर शुगर की बीमारी है, ऐसा कहा जाता था। बाद में विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा यह मानक सन् 1985 में घटाकर 140 कर दिया गया। तब भी शुगर की दवाइयां कम बिक रही थी तो सन् 1997 में यह मानक घटाकर 125 कर दिया गया और सन् 2003 में तो यह मानक और भी घटाकर 100 कर दिया गया जो अब तक चल रहा है।

यह मानक बदलने का कार्य विश्व स्वास्थ्य संगठन करता है, ड्रग्स माफियाओं के दबाव में। और इन्हीं मानकों का अनुकरण विश्व के सभी एलोपैथिक डॉक्टर करते हैं। इसलिए 2003 के बाद से शुगर की दवाइयों की खपत बहुत तेजी से बढ़ गई है। मानक बहुत कम हो जाने के कारण लोग अपने को शुगर का रोगी मानते हैं और दवाइयां लेना शुरू कर देते हैं जबकि कोई बीमार होता नहीं है। आधे से अधिक लोग आजकल झूठे ही अपने को शुगर का रोगी बता रहे हैं। सच तो यह है कि स्वस्थ आदमी को मुर्ख बनाकर उसको बीमार बताया जा रहा है और शुगर की अनावश्यक दवाइयों के द्वारा हृदय रोग आदि अन्य बीमारियों को भी पैदा किया जा रहा है।

इसी प्रकार हीमोग्लोबिन, इस्नोफीलिया आदि स्वास्थ्य परीक्षण के अन्य मानकों के बारे में समझना चाहिए। अन्तरराष्ट्रीय ड्रग्स माफियाओं के दबाव में विश्व स्वास्थ्य संगठन मानक बदलकर पूरे विश्व की जनता को बेवकूफ बना रहा है। कम से कम भारत की जनता को इस बात को समझना चाहिए।

**-ओंकार नाथ कोष्टा**

# एमडीडीए को तीन माह में फैसला लेने के निर्देश

नैनीताल। हाईकोर्ट ने देहरादून के थाने स्थित जामा मस्जिद कमेटी द्वारा अनाधिकृत निर्माण की सीलिंग और शमन आवेदन निरस्त होने के खिलाफ दायर रिट याचिका पर अहम फैसला सुनाते हुए इसे निरस्त कर दिया। कोर्ट ने याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता सलमान खुर्शीद और प्रतिवादी मसूरी देहरादून विकास प्राधिकरण की ओर से अधविक्ता राहुल कंसल ने पैरवी की। न्यायमूर्ति मनोज कुमार तिवारी की पीठ ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद निर्देश दिया कि एमडीडीए का सक्षम प्राधिकारी एक सप्ताह में याचिकाकर्ता को लिखित रूप में उन सभी आवश्यक दस्तावेजों और आपत्तियों की सूची सौंपेगा जो आवेदन के लिए जरूरी है। इसके बाद याचिकाकर्ता द्वारा नया आवेदन और दस्तावेज जमा करने की तारीख से तीन माह में एमडीडीए को कानूनन अन्तिम निर्णय लेना होगा। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि याचिकाकर्ता के पास उचित प्रक्रिया के तहत भूमि उपयोग परिवर्तन के लिए राज्य सरकार के समक्ष आवेदन करने का विकल्प खुला रहेगा।

## सात फेरे

अग्नि के सात फेरे
सात सालों का नहीं
सात जन्मों का है साथ
अटूट विश्वास, प्रेम समर्पण
का बन्ध है यह।
दो तन, मन, का मिलन नहीं
दो आत्माओं का मिलन है यह।
सात फेरों का यह साथ
हमारी संस्कृति, हमारी परम्पराओं
की सौगात
इन संस्कारों को तुम भूल ना जाना
अपनी जड़ों से तुम दूर ना जाना।

**-रेनू कपूर**, गाजियाबाद

# सितारगंज संवारने के लिये धनराशि

सितारगंज। नगर पालिका परिषद में जल्द ही विकास कार्यों की बड़ी सौगात दिखेगी। राज्य वित्त आयोग से जारी करीब 6 करोड़ 83 लाख रुपये लागत से नगर क्षेत्र में कार्य होने हैं। 52 कार्यों की टेंडर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## एससी का दर्जा देने के लिये सिर मुडवाया

रुद्रपुर। बंगाली समुदाय को अनुसूचित जाति (एससी) का दर्जा देने की मांग को लेकर किच्छा बाईपास स्थित रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रतिमा के सामने बंगाली नेताओं का धरना जारी है। शासन-प्रशासन पर अनदेखी का आरोप लगाते हुए बंगाली उत्थान समिति के अध्यक्ष सुव्रत विश्वास सहित कई नेताआं ने अपने सिर मुडवा लिये हैं। साथ ही इन कटे हुए बालों को ज्ञापन के साथ प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री को भेजने का ऐलान कर दिया।

## कुम्भ की तैयारियों को लेकर निर्देश

हरिद्वार। शहरी विकास मंत्री राम सिंह कैड़ा ने कुम्भ की तैयारियों की समीक्षा के लिये सीसीआर भवन में बैठक की। उन्होंने सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि कुम्भ से जुड़े सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय सीमा के भीतर और उच्च गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएं। मेलाधिकारी सोनिका ने परियोजनाओं की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए बताया कि सभी कार्यों के लिए स्पष्ट टाइमलाइन तय की गई है।

## डाक व्यवस्था को बदनाम कर रहे हैं हरियाण से आये पोस्टमैन, जांच हो

उत्तराखण्ड में डाक व्यवस्था को चरमराने में हरियाणा से आये युवा पोस्टमैनों का बड़ा हाथ बताया जा रहा है। जगह-जगह से सूचनाएं आ रही हैं कि जब से इनकी नियुक्ति हुई है, डाक वितरण में घोर लापरवाही कर रहे हैं। पहले से जहां स्थानीय लोग डाक व्यवस्था को दुरुस्त रखते थे, वहीं अब यह आवश्क डाक को भी आनाकारनी कर रहे हैं। ऊपर से कई अन्य शिकायतें इनकी मिल रही हैं।

आश्चर्य होता है कि डाक वितरण पवित्र कार्य माना जाता है और केन्द्र सरकार की ओर से इसके लिये बड़े दावे होते रहे हैं। डाकघरों को नये तरीके से बढ़ावा देने के अलावा डाक वितरण के लिये युवाओं को जोड़ा गया लेकिन प्रदेश में घोर लापरवाह ऐसे डाकियों के कारण अशान्ति होने लगी है। मुनस्यारी से एक वीडियो फिर वायरल हो रहा है कि जिसमें युवा पोस्टमैन से डाक वितरण में लापरवाही पर गुस्सा जताया जा रहा है। पहले भी बालिका भगाने और डराने जैसी बातों को लेकर मामला उछला था। कपकोट में एक बालिका के साथ होती झड़प का वीडियो वायरल हुआ था। चम्पावत में डाक वितरण में हो रही लापरवाही को लेकर बार-बात शिकायतें दर्ज हो रही हैं। इसके अलावा अन्य जगह भी इस प्रकार के घोर लापवाह डाक कर्मियों की जांच की मांग की जा रही है जो पूरे विभाग को बदनाम कर रहे हैं। आखिर डाक जैसी अति महत्वपूर्ण सामग्री को समय से क्यों नहीं दिया जाता है। क्या केवल नौकरी पाने के लिये इस पर्वतीय प्रदेश में भर्ती हुए थे। सरकार को भी गम्भीर मसले पर कार्यवाही करनी होगी अन्यथा आम जनता डाक व्यवस्था को लेकर बड़ा आन्दोलन करेगी।

## परिक्रमा

## फचैऽक

गणेश पाण्डेय

प्राइवेट इस्कूलनकि मनमानी, सरकार कुनै आ्व कम करन लूट खसोट आ्व बन्द है जालि, तनन कैं औकात में धरन तनन कैं औकात में धरन, पढ़ाई लेखाई एक समान होलि लुटनई तौं लोगन जां तां, जा्ग जा्ग आपणि दुकान खोलि सरकारि इस्कूलन क्वे न चान, तन्ा्र जाव में फसि जानी भौत कठिन हैगो कम करन, प्राइवेट इस्कूलनकि मनमानी।

## सोबला-तिदांग मार्ग पर मलबा बना आफत

धारचूला। दारमा घाटी को जोड़ने वाली सोबला-तिदांग सड़क पर पंगबाबे के पास भारी बोल्डर और मलबा आने से वाहनों का जाम लग गया। असल में पहाड़ी दरकने से इस मार्ग में पहले भी दिक्कतों का सामना करना पड़ा है। अब फिर से अचानक मलबा और बोल्डर सड़क पर आने से यात्रियों को दिक्कत का सामना करना पड़ा। मलबा हटाकर जैसे-तैसे फंसे वाहनों को पार किया गया लेकिन सोबला-तिदांग मार्ग पर मलबा गिरने से हो रही आफत को निपटने के लिये अभी और तैयारी की जरूरत है। मानसून को देखते हुए बीआरओ मुस्तैद है और जेसीबी मशीनों की मदद से मलबा हटाया गया है। लेकिन लगातार गिर रहे मलबे के कारण सड़क पर सावधानी जरूरी है।

## गंगोलीहाट पृथक जिला बनाने की मांग

गंगोलीहाट। गंगोलीहाट पृथक जिला बनाने की पुरानी मांग को फिर से दोहराया गया है। राज्यपाल ले.जनरल गुरमीत सिंह के आगमन पर उनके सम्मुख भी इस मांग को रखा गया।

राज्यपाल ने अपने दौर में मुनस्यारी, चौकोड़ी, गंगोलीहाट की यात्रा की और महाकाली दरबार में मत्था टेका। मन्दिर कमेटी द्वारा प्रतीक चिन्ह देकर उनका सम्मान किया गया। जिला बनाओ संघर्ष समिति गंगोलीहाट, बेरीनाग, गणाईगंगोली तहसील को मिलाकर गंगावली जिला घोषित करने की मांग का ज्ञापन सौंपा। बताते चलें कि गंगावली जिला बनाने की मांग को लेकर गणेश सिंह बोरा द्वारा लगातार आवाज उठाई जाती रही है। महाकाली मन्दिर समिति के अध्यक्ष हरगोविन्द रावल ने ज्ञापन सौंपते हुए मन्दिर माला मिशन के तहत चल रहे कार्यों में अनियमितता की बात कही। इसके अलावा अन्य बातें भी रखी।

## आदि कैलास यात्रा में रिकॉर्ड यात्री

धारचूला। आदि कैलास और ओम पर्वत यात्रा के लिये इस वर्ष यात्रा में रिकॉर्ड वृद्धि हुई है। अभी तक डेढ़ माह की यात्रा में जिस हिसाब से यात्रीगण पहुंचे हैं उसने पुराने रिकार्ड तोड़ डाले। इस वर्ष एक जून से शुरू हुई यात्रा में अब तक प्रशासन ने 36776 इन लाइन परमिट जारी किये हैं। यह आंकड़ा पिछले वर्ष जारी किये गये कुल 36526 परमिट से अधिक है। पिछले वर्ष 26701 पुरुष और 9826 महिला यात्री शामिल थे।

देश के विभिन्न राज्यों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु, पर्यटक और प्रकृति प्रेमी आदि कैलास तथा ओम पर्वत क दर्शन के लिये पहुंच रहे हैं। साथ ही राज्य के हर कौने से यात्रियों का आकर्षण इस ओर है। जिला प्रशासन और तहसील ने यात्रा प्रबन्धन, सुरक्षा और यात्री सुविधा को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य किया है। परमिट प्रक्रियाको भी सुगम बनाया गया है। डीएम पिथौरागढ़ आशीष्ा भटगाई कहते हैं कि पिछला रिकार्ड सिर्फ 36 दिनों में टूट गया था। यात्रियों की रिकार्ड संख्या सुखद है।

## वन ग्रामों करे मिले मालिकाना हक, चेतावनी दी

रामनगर। उत्तराखण्ड में वन अधिकार कानून-2006 के तहत सभी वन ग्रामों, गोठों और खत्तों में निवास कर रहे लोगों को मालिकाना हक दिए जाने की मांग को लेकर विभिन्न सामाजिक, महिला और जनसंगठनों ने एकजुट होकर आन्दोलन तेज करने का निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में एक अक्टूबर को हल्द्वानी में विकाल प्रदर्शन आयोजित किया जायेगा। प्रदर्शन में 2016 के मलिन बस्ती अधिनियम के तहत शहरी मजदूर बस्तियों के नियमितीकरण तथा नजूल भूमि के स्थायी समाधान की मांग भी प्रमुख रूप से उठाई जाएगी।

पायते वाली रामलीला परिसर में आयोजित बैठक में सुन्दरखाल, देवीचौड़ खत्ता, बिन्दुखत्ता, मानपुर, कालूसिद्ध और नई बस्ती पूछड़ी की ग्राम स्तरीय वनाधिकार समितियों के सदस्यों के साथ्ा विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और महिला संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में भूमि अधिकारों और प्राकृतिक संसाधनों पर स्थानीय समुदायों के अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक संघर्ष का संकल्प लिया गया। बैठक में तरुण जोशी, शंकर गोपाल, विनोद बडौनी, ललिता रावत सहित तमाम लोग मौजूद थे।

## प्रधानमंत्री मोदी के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रम में जिला प्रभारी मंत्री भरतसिंह चौधरी का सम्बोधन

**ललित नैनवाल**

कर्णप्रयाग। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 12 साल बेमिसाल कार्यक्रम के तहत ब्लाक सभागार में केबिनेट मंत्री एवं जिला प्रभारी भरत सिंह चौधरी ने केन्द्र सरकार के बारह साल में किए गये कार्यों को जनप्रतिनिधि एवं अधिकारियो एवं जनता के सम्मुख कहते हुए कहा की प्रधानमंत्री मोदी के तीसरी बार 22 राज्यों मे एनडीए सरकार कार्य कर रही है।

जनपद चमोली मे तीसरी बार किए गये विकास कार्यों मे विकास की लहर मे गाँव के पायदान मे खडे अन्तिम व्यक्ति को सीधा लाभ दिया जा रहा है, रेलवे लाईन, बद्रीनाथ धाम सौंदर्यकरण, जल्द कालेश्वर राफ्टिंग सेन्टर, बॉस की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है, पीएम किसान योजना सम्मान निधि की फाइल मे हस्ताक्षर करके गरीब किसान युवा ओर महिलाओं को लाभ मिल रहा है, हर योजना का सौ प्रतिशत लाभ कतार मे खडे अन्तिम व्यक्ति है। 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर निकल कर आए हैं, इस बार जनता चौथी बार भी केन्द्र मे मोदी सरकार को ही कमान सौंपेगी।

बैठक मे अधिकारियो के साथ विकास कार्यों की समीक्षा के दौरान जनप्रतिनिधियो ने अपनी अपनी समस्या रखी। प्रभारी मंत्री ने अधिकारियो को त्वरित समाधान के निर्देश दिए। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना की समीक्षा के दौरान डिम्मर (टटासु) सुमलटा-बणसोली-कुंडडुंगरा-स्वर्का मोटर मार्ग का मुद्दा उठाते हुये भाजपा नेता राज्य आन्दोलन कारी महिपाल नेगी ने कहा की 2015 मे उक्त मोटर मार्ग स्वीकृति मिलने के बाद 2017 शासनदेश होने के बाद बार वन भूमि अड़चनों के बाद भी वन भूमि की स्वीकृति नहीं मिलने के कारण उक्त सड़क निरस्त की गई लेकिन विधायक अनिल नौटियाल की हस्तक्षेप के बाद इस योजना को 2025 में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना मे चयनित किया गया, लेकिन आज तक वन भूमि की कार्यवाही मे अटकी है। ग्रामीणों ने 2027 विधान सभा चुनाव बहिष्कार का मन बना लिया है। प्रभारी मंत्री ने पीएमजी एसवाई एवं लोक निर्माण विभाग गोचर के अधिशासी अभियन्ता एवं प्रभागीय वनाधिकारियों को निर्देशित किया की सम्बन्धित सड़क की प्रकिया को पूर्ण कर जल्द शासन को अवगत कराएं निर्माण पूरा किया जा सके। इस अवसर पर विधायक अनिल नौटियाल, जिलाध्यक्ष गजपाल वर्तवाल, जिला महामंत्री अरुण मैठाणी, विनोद कनवासी, प्रमुख दीपिका मैखुरी, नगर पालिका अध्यक्ष गणेश शाह नगर पालिका अध्यक्ष गोपेश्वर संदीप रावत ग्रामीण मण्डल विक्रम मिंगवाल नगर अध्यक्ष वृजेश बिष्ट, जनप्रतिनिधि टीका प्रसाद मैखुरी, पूर्व प्रमुख राजेन्द्र प्रसाद सगोई, पूर्व जिला पंचायत सदस्य विनोद नेगी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य गायत्री नेगी, कान्ता रावत, मधु रावत, राकेश नेगी सभासद सम्पूर्ण नन्द डिमरी पूर्व नगर अध्यक्ष अनुज डिमरी नगर महामंत्री चेतन मनोडी कुसुमलता कंडारी, राजेन्द्र नेगी मौजूद थे।

## मूल मुद्दों पर संघर्ष तेज करेगी यूकेडी

हल्द्वानी। उत्तराखण्ड क्रान्तिदल के विधि प्रकोष्ठ की ओर से संगठन विस्तार व सदस्यता अभियान के तहत हुए कार्यक्रम में राज्य के मूल मुद्दों, पलायन, रोजगार और क्षेत्रीय अस्मिता को लेकर चर्चा हुई। पूर्व विधायक नारायण सिंह जन्तवाल ने कहा कि लम्बे संघर्ष और बलिदानों का परिणाम यह राज्य है। केन्द्रीय उपाध्यक्ष भुवन जोशी ने कहा कि प्रदेश के जल, जंगल, जमीन पर पहला अधिकार यहाँ के लोगों का है।

## कैंची का मेला और जाम से हाल खराब

### भक्ति के नाम पर पिकनिक ज्यादा होने लगी है

नैनीताल। भवाली मार्ग स्थित कैंची मन्दिर में इस बार भी मेले की धूम रही लेकिन यह सच्चाई है कि चाहे व्यवस्था सुधार के लाख दावे हो रहे हों परन्तु सड़कों पर लगे जाम से हाल खराब हैं। भवाली अल्मोड़ा मार्ग पर कैंची धाम में हर दिन जाम की समस्या बनी है लेकिन मेले के दौरान तो आफत ही मच गई। पुलिस व प्रशासन ने व्यवस्था बनाने और जाम से छुटकारा के लिये रूट डायवर्ट व शटल बस सेवा व अतिरिक्त सुरक्षा इन्तजाम किये थे। ऐसे में मेले वाले दिन तो कैंची आने वालों को आराम था परन्तु मेले से दो दिन पहले से जिस प्रकार रूट डायवर्ट किया गया उससे अन्य मार्गों पर जाम से दूर आने-जाने वाले यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। इस समस्या से निपटने को आगे ठोस कदम जरूरी हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

## भूख मीठी कि.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

मैदान साफ करके खेती योग्य बना लिया। उसके पास अब इतना अनाज पैदा होने लगा कि वह दूसरों को अनाज बचेने भी लगा।

यद्यपि तब राज को जंगल साफ करके खेती करने में कोई आपत्ति नहीं थी परन्तु यदि कोई व्यक्ति खेती करता तो उसे भू-राजस्व या कर के रूप में अपनी पैदावार का कुछ हिस्सा राजा के पास पहुँचाना पड़ता था। जब पैदावार का हिस्सा राजा के पास नहीं पहुँचा तो राजा ने उसे बुलाया। उसने हिस्सा न देने का कारण पूछा गया तो उसने तुरन्त विनती की- 'हुजूर, खेती मैं करता हूँ, मैं इससे इससे इन्कार नहीं करता। मुझे पैदावार का हिस्सा यहाँ पहुँचाना चाहिये, अपने इस कर्तव्य से भी मैं वाकिफ हूँ। पर सरकार! इस पैदावार का मै। एकमात्र हिस्सेदार नहीं हूँ।' राजा ने पूछा- कितने हिस्सेदार हैं? 'नौ हुजूर'- हरमल ने तपाक से जवाब दिया। राजा ने फिर पूछा, 'माँ बाप तुम्हारे हैं नहीं, विवाह तुम्हारा हुआ नहीं। तुम्हारा कोई भाई भी नहीं। गाँव का और कोई व्यक्ति भी तुम्हारा साझीदार नहीं है, फिर यह नौ हिस्सेदार कौन-कौन हैं?' उसने बताया- 'सरकार मेरा पहला हिस्सेदार जंगली खरगोश। बीज उग भी नहीं पाता कि उसके झुण्ड आकर उसे चर जाते हैं। जब फसल की पौंध बड़ी होती है तो मेरे दो और हिस्सेदार- घुरड़ व कांकड़ आ जाते हैं, जो भी फसल का पौध को चट कर जाते हैं। जब फसल में बाल आ जाती है तो बन्दर, लंगूर, सील (सीही) व भालू भी अपना हिस्सा लेने पहुँच जाते हैं। फसलों का अधिकांश हिस्सा तो यही लोग ले जाते हैं। जो फसल इन सात हिस्सेदारों से बचती है, और जो बहुत कम होती है,-का आठवाँ हिस्सेदार हूँ। पर हुजूर, मैं आठवें का भी मैं अकेला हिस्सेदार नहीं हूँ। एक नवाँ हिस्सेदार भी है-वह है मेरा कुत्ता। कुत्ता न तो मेरे उक्त सातों हिस्सेदार मेरे लिये कुछ भी बचाने को तैयार नहीं। अत: कुत्ते को देने के बद जो हिस्सा मेरे लिये बचता है वह मेरे लिये भी कम है।' और हुजूर 'हरमल आगे बोला, एक हिस्सेदार चुहिया भी अपना हिस्सा माँग रही है, पर उसके लिये कोई गुंजाइश ही नहीं रही।

राजा को उसके तर्क में बल मालूम पड़ा। उसने सहर्ष हिस्से की मांग ही नहीं त्यागी, बल्कि वह पूरा खेत हरमल के नाम कर दिया। अब कोई दूसरा आदमी उस खेत पर अपना हक नहीं जमा सकता था। कुछ ही सालों में वह अपने गाँव ही नहीं, वरन पूरे इलाके में सर्वाधिक सम्पन्न किसान बन गया। उसका विवाह भी हो गया, एक-एक करके उसके तीन लड़के भी पैदा हुए। उसने गाय, भैंस, बकरियाँ भी पाली तथा उसकी सम्पन्नता दिन-पर-दिन बढ़ती गयी। उसके खेत में अब मजदूर भी काम करने लगे परन्तु उसने स्वयं अपने हाथों से मेहनत करना नहीं छोड़ा।

पास के एक गाँव में एक वैद्य जी रहते थे। वह वैद्य ही नहीं, एक सन्त पुरुष भी थे। समस्या चाहे शारीरिक हो या मानसिक, वह उसके निवारण के लिए हर समय तत्पर रहते थे। उनकी सलाह लोग, कोई भी काम प्रारम्भ करने से पहले अवश्य लेते थे और उनके पास हर समस्या का समाधान भी मौजूद रहता था। अब हरमल बूढ़ा हो गया था। उसे एक बात का दुख था कि उसके तीनों बेटे न तो परिश्रमी थे और न ही बुद्धिमान।

विवेक की कमी तो उनमें थी ही। जब हरमल बीमार पड़ा तो उसे आभास हो गया कि अब उसे इस संसार से जाना है। अपने बेटों को कोई लम्बी सीख देने का अब उसके पास इतना समय ही नहीं रह गया था। उसने इतना भर अपने तीनों बेटों से कहा, 'तुम्हें जब कभी कोई परेशानी हो, कोई विपत्ति पड़े तो वैद्य जी से अवश्य सलाह ले लेना। वह नेक सलाह देंगे और निश्चय ही भला होगा।' इतना कह कर उसने दम दम तोड़ दिया।

उसके मरने के बाद उसके बेटों ने स्वयं कोई काम नहीं किया। इसकी उन्होंने जरूरत ही नहीं समझी, क्योंकि उनका पिता अपार दौलत छोड़ गया था। वह तीनों दिनभर पड़े रहते या गपशप सुनते। उन्हें दिन भर कुछ न कुछ खाने को मिलता रहता। एक दिन उन्हें पिता की बात याद आई कि वैद्य जी की सलाह अवश्य लेना। वे वैद्य जी के पास गये। उन्होंने वैद्य जी को अपनी समस्या सुनाई- 'हमें भूख बिल्कुल नहीं लगती। भोजन-रोटी, दाल, चावल, खीर, सब्जियाँ, मिष्ठान-कोई भी रुचिकर नहीं लगता। एक प्रकार से हर खाद्य पदार्थ से अरुचि हो गयी है। पेट में वायु विकार उत्पन्न हो गया है तथा और भ्झी कई तरह के रोगों से ग्रसित होते जा रहे हैं। आप हमें कोई औषधि दीजिये ताकि हमें भोजन रुचिकर लगे और रोग दूर हो जाये।' वैद्य जी ने उनकी दिनचर्या के विषय में जानकारी ली फिर कहा- 'तुम अभी घर चले जाओ। कल प्रात: मैं आकर कोई उपाय करूंगा।' इसके लिये उन्होंने एक शर्त रखी कि उनकी हिदायतों का पालन पूर्ण रूप से होना चाहिय। उन्होंने वैद्य जी की यह शर्त स्वीकार कर ली। जाते-जाते वैद्य जी ने उनसे कहा कि वह सुबह उनके आने तक किसी तरह का भोजन ग्रहण न करें।

अगले दिन प्रात: वैद्य जी उनके घर गये। उन्होंने देखा कि वहाँ अकर्मण्यता व आलस्य का साम्राज्य छाया हुआ था। घर में तरह-तरह के पकवान तैयार हो रहे थे। पर उनकी हिदायत के अनुसार ही किसी ने तब तक कोई चीज खाई नहीं थी। वैद्य जी ने तीनों के हाथ में फावड़ा देकर कहा-तुम खेत पर चले जाओ। मैं जो दवा दूंगा, उसका असर तभी होगा, जब तुम खेत में फावड़ा चलाओ और पसीना शरीर से बाहर निकल पसीना जब तक बदन में रहेगा, तब तक दवा असर नहीं करेगी। मैं ठीक दोपहर में तुम्हारे लिये स्वयं भोजन लाऊँगा व दवा की खुराक भी अपने सामने ही दूंगा।' वह तीनों खेत पर जाकर फावड़ा चलाने लगे। उन्होंने जीवन में कभी मेहनत नहीं की थी, इसलिये थोड़ी देर में ही थक कर चूर-चूर हो गये। हाथों में छाले पड़ गये। कपड़े पसीने से तरबतर हो गये परन्तु वैद्य जी की हिदायत थी कि जब तक वह न आ जायें तब तक काम बन्द न करें। अत: थक कर भी वह काम करते रहे। ज्यों ही दोपहरी हुई, वह वैद्य जी का इन्तजार करने लगे। किन्तु वैद्य जी नहीं पहुँचे। अब उन्हें भूख लगने लगी थी। वैद्य जी की राह देखते-देखते दिन का तीसरा पहर बीत गया। अब वह एक तो, थक कर चूर हो गये दूसरे, उन्हें बहुत अधिक भूख लगने लगी थी। भूख इतनी तीव्र हो गयी कि गाँव की ओर से आने वाली भोजन की सुगन्ध से उनकी बेचैनी और भी बढ़ने लगी। सूरज ढलने पर वैद्य जी आते हुये नजर आये। उनके साथ एक नौकर भी था, जिसके हाथ में एक छोटी सी पोटली व एक लोटा पानी था। वैद्य जी ने कहा 'माफ करना, मुझे दवा तैयार करने में समय लगा, खैर अब तुम पहले भोजन कर लो उसके बाद मैं दवा देता हूँ।' वह तीनों भोजन की पोटली पर झपट पड़े। पोटली खोली गई तो उसमें बाजरे की तीन रोटियाँ थीं, वह भी अधिक मोटी नहीं। सब्जी तो कोई थी ही नहीं। केवल एक डली नमक की थी। उन्हें इतने जोरों की भूख लगी थी कि वह रोटियाँ ऐसे चाव से खाने लगे जैसे कि पेड़ा हो। पर इतनी भूख में एक-एक रोटी से क्या होता? भूख में कोई कमी नहीं हुई और वह और रोटियों की माँग करने लगे। तब वैद्य जी ने कहा- 'तुम्हें कोई रोग नहीं है, कोई अपच नहीं है। इसलिये तुम्हारे लिये मैं कोई दवा नहीं लाया हूँ। तुमने कभी कोई परिश्रम नहीं किया, परन्तु खाने के मामले में किसी न किसी रूप में मुँह दिन भर चलता रहता है। जहाँ रुचिकर व्यंजन भी अरुचिकर लगते थे, बाजरे की सूखी रोटियाँ भी तुमने कितने चाव से खाई हैं? भोजन मीठा नहीं होता भूख मीठी होती है। तुम्हारी दवा केवल शारीरिक श्रम है, इसके रहते तुम्हे कोई रोग नहीं लग सकता और न ही आलस्य रहेगा।' तीनों की समझ में श्रम का मर्म आ गया और उन्हें अपने पिता की अन्तिम राय को इतने दिनों तक न मानने का पछतावा भी हुआ।

## लस्का कमर सरपंच की.....

मदकोट। जोहार सांस्कृतिक वेलफेयर सोसाइटी ने इस बार दूरस्थ क्षेत्र बोना में 'गेलपातल' का आयोजन किया। यह केवल वृक्षारोपण तक ही सीमित न रहकर बड़ा सुघड़ और यादगार कार्यक्रम कहा जायेगा क्योंकि सोसाइटी की ओर से जो किया जाना था वह तो अपनी जगह है ही लेकिन ग्राम के सरपंच खड्क सिंह रावत द्वारा दिखाई गई रुचि से इस आयोजन में रंग बिखरे। आयकर विभाग के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त श्री खड्क सिंह रावत की हमेशा लालसा रही है कि अपने ग्राम और अपनी संस्कृति के लिये ठोस कार्य किया जाए। इसी लहर में वह सेवानिवृत्त होते ही वह बोना ग्राम के सरपंच बने और लगातार इस दूरस्थ क्षेत्र के विकास के लिये समर्पित हैं। संयोग से इस बार का गेलपातल आयोजन भी यहीं हुआ जिसमें सरपंच (रावत दम्पत्ति) की थिरकन देखने को मिली-

लस्का कम सरपंच की.....

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

‘पिघलता हिमालय’ स्थापना के 49वें वर्ष में प्रवेश की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ-

# पांगती पुस्तक भण्डार
## डीडीहाट

# के०एस०रावत
## शान्तिकुन्ज, छड़ायल नयाबाद
## (निकट- सेंट जेबीयर स्कूल),हल्द्वानी

# ललित पाठक
## पूर्व ब्लाक प्रमुख, गंगोलीहाट

## नगर उद्योग व्यापार मण्डल टनकपुर

# धीरु धर्मशक्तू
## अध्यक्ष व्यापारसंघ जौलजीवी

# Hotel Bala Paradise
## Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

# धमोत होम स्टे
## धरमघर/चौकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148 www.mountainheights.in

न तेरा न मेरा **Thats** मो. 9458920379, 6396098804
# APNA GHAR
## चौकोड़ी
**HOTEL RESTRO BANQUET**
**Near by-** (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया
YOGA MEDITATION HOMELY FOOD LIVE MUSIC BIRTHDAY WEDDING

# होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
## नानासेम, मुनस्यारी
## गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236 मो.- 8958525979, 9411134775

घर से बाहर अपनों का साथ
# होटल लक्ष्य इन
## मदकोट
## नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।
सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)